P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* (Part-1) April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

1857 की क्रांति के कारण, क्षेत्र एवं प्रभाव

प्रदीप कुमार त्यागी
विभागाध्यक्ष,
सांख्यकीय विभाग,
दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह
स्नातकोत्तर महाविद्यालय
अनूपशहर, बुलंदशहर

लक्ष्मण सिंह
विभागाध्यक्ष,
संस्कृत विभाग,
दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह
स्नातकोत्तर महाविद्यालय
अनूपशहर, बुलंदशहर

सारांश

किसी भी शासन में जब अन्याय व दमन अपनी सीमा लांघ जाता है तब क्रांति निश्चित होती है। 1857 की क्रांति कंपनी शासन द्वारा दिन प्रतिदिन भारतीय सभ्यता और संस्कृति पर प्रहार करके पश्चिमी सभ्यता और संस्कृति का प्रचार प्रसार करने और भारतीयों के साथ भेदभाव पूर्ण व्यवहार के कारण जन सामान्य के मन में दबी हुई आक्रोश की अग्नि का ही प्रतिफल थी। इस क्रांति ने भारतीय जन मानस को जागृत किया और विश्वास दिलाया कि अंग्रेजो से स्वतंत्रता प्राप्त की जा सकती है। हमारे स्वतंत्रता आन्दोलन की लड़ाई का संगठित रूप में शुभारम्भ होना 1857 की क्रांति की प्रमुख उपलब्धि थी जिसका अंतिम परिणाम हमें 15 अगस्त 1947 को देश की स्वतंत्रता के रूप में मिला।

मुख्य शब्द : क्रांति, स्वतंत्रता आन्दोलन, राष्ट्रवाद, स्वतंत्रता।

प्रस्तावना

1857 की क्रांति जिसे प्रथम भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन या सिपाही विद्रोह भी कहा जाता है। यह क्रांति ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा दिन प्रतिदिन भारतीय सभ्यता और संस्कृति पर प्रहार करके पश्चिमी सभ्यता और संस्कृति का प्रचार प्रसार करने के कारण उत्पन्न आक्रोश का ही प्रतिफल थी। क्रांति मेरठ की छावनी से प्रारंभ होकर भारत से ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन की समाप्ति के साथ खत्म हुई। इसीलिए हम मेरठ को क्रांति धारा के नाम से संबोधित करते हैं। भारत के गौरवशाली इतिहास को देखने पर हम पाते हैं, कि भारत पर अनेकों आक्रमणकारियों ने आक्रमण किये लेकिन वे आक्रमणकारी विदेशी नहीं रहे समय के साथ भारत को अपनी जन्मभूमि मानकर इसकी संस्कृति और सभ्यता में ही रच बस गए। भारत की कृषि, उद्योग तथा कला की उन्नति में इन्होने भरपूर सहयोग किया। लेकिन कंपनी शासन ने इसके विपरीत कार्य किया। जितना निरंकुश शासन हम आज तानाशाही, राजशाही, निरंकुशता या अराजकतावादी लोकतंत्र के रूप में देखते हैं, उनसे भी बदतर ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन था। 1857 तक भ्रष्ट कंपनी ने अपने क्षेत्रीय नियंत्रण में रहने वाले भारतीयों के खुलेआम शोषण के लिए व्यापार के माध्यम से विभिन्न हथकंडे अपना कर उनकी आमदनी ख़त्म करके उनको लाचारगी के साथ जीवन जीने के लिए मजबूर कर दिया गया था। अंग्रेजी शासन के विषय में अमेरिका के 8 अगस्त 1853 को प्रकाशित नेशनल हेराल्ड अख़बार में कार्ल मार्क्स ने अपने विचार इस प्रकार प्रकट किये हैं–"अंग्रेज पहले विजेता थे, जिनकी भारत की सभ्यता तक पहुँच नहीं थी। उन्होंने ग्राम समाज की जड़ें हिला कर भारतीय उद्योग धंधो को बर्बाद करके इस सभ्यता का नाश किया। भारतीय समाज में जो कुछ भी महान और गौरवपूर्ण था उन्होंने उसे धूल में मिला दिया। भारत में अंग्रेजी राज्य ने धन लूटने के अलावा कुछ भी नहीं किया।

1857 क्रांति के प्रमुख कारण

1857 की क्रांति की पृष्ठभूमि को देखा जाये तो इसके कई कारण दृष्टिगोचर होते हैं, जिनमे धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक कारणों के साथ साथ भारतीय सैनिकों के साथ किया जाने वाला पक्षपातपूर्ण व्यवहार मुख्य है। क्रांति के मुख्य कारण निम्नवत हैं–

1. व्यापारी वर्ग में असंतोष
2. किसानों और मजदूरों का असंतोष
3. सैनिकों का असंतोष
4. धार्मिक असुरक्षा के कारण जन सामान्य का असंतोष
5. राज्य हड़प नीति के प्रति असंतोष
6. क़ानून एवं न्याय व्यवस्था में भेदभाव के प्रति असंतोष
7. नस्लभेद के प्रति असंतोष

कंपनी शासन ने भारतीय पारंपरिक अर्थव्यवस्था के विपरीत नीति निर्धारण करके गरीब कामगारों और व्यापारियों को उद्योग रहित कर दिया जिससे इन वर्गों में असंतोष की भावना व्याप्त थी। कंपनी ने 1813 में जिस मुक्त व्यापार की नीति को अपनाया उसके कारण ब्रिटिश व्यापारी विदेश से मशीन निर्मित विभिन्न सामानों को आयात करने लगे इस स्पर्धा में परंपरागत तकनीक से बनी हुई भारतीय वस्तुए इनका मुकाबला नहीं कर सकीं भारतीय हस्तशिल्प उद्योग, कपडा उद्योग, बर्तन उद्योग इत्यादि को भारी नुकसान हुआ। परंपरागत उद्योगों के नष्ट होने और आधुनिक उद्योगों के विकसित न होने के कारण यह स्थिति और भी ख़राब हो गई।साधारण जनता के पास खेती के अलावा कोई और साधन नहीं बचा।खेती करने वाले किसानों की हालत भी ख़राब थी।कंपनी शासन ने किसानों को जमीदारों की दया पर छोड़ दिया जिन्होंने लगान बढाकर किसानों पर और भी जुल्म ढहाए। इससे किसानों में असंतोष व्याप्त था। कंपनी के प्रारंभिक वर्षों में सेना में जातिगत विशेषाधिकारों और रीति रिवाजों को महत्त्व दिया जाता था परन्तु 1840 के बाद सिपाहियों को जाति धर्म से सम्बंधित चिह्न पहनने से मना कर दिया गया।भारतीय और अंग्रेज सैनिकों के बीच वेतन विसंगति अपनी चरम सीमा पर थी। भारतीय सैनिकों का मासिक वेतन केवल 7 रु. था जिससे परिवार का भरण पोषण भी नहीं हो पाता था। कंपनी शासन ने हिमालय में कॉलोनाइज़ेशन की योजना प्रस्तुत की थी जिसके अनुसार आयरलैण्ड और स्कॉटलैण्ड के किसानों को भारत में बसने के लिए मुफ्त जमीन देकर प्रोत्साहित किया जाय। उनकी स्थिति को मज़बूत करने के लिए ब्रिटिश सरकार ने भारतीय मजदूरों के लिए ऐसा कानून पास किया जिससे हज़ारों की संख्या में वे कानूनी तौर पर पराधीन हो गए। अंग्रेजो का मत था कि भारतीयों को अवश्य ईसाई बना लेना चाहिये।भारतीय भाषाओं को खत्म कर देना चाहिए और उनकी जगह अपनी मातृभाषा अंग्रेजी प्रचलित कर देनी चाहिए। कई विद्वानों का यह स्पष्ट मानना है कि उस समय कंपनी के कुछ कर्मचारी ईसाई मिशनरियो के साथ मिलकर धर्म परिवर्तन के कार्य में संलिप्त थे इससे जन सामान्य में कंपनी शासन के प्रति रोष की भावना व्याप्त थी।

प्रसिद्ध इतिहासकार सर जान माल्कम ने लिखा है कि "1857 के पहले देश भर में ऐसे पत्रों का काफी प्रचार था जिनमें यह बताया गया था कि अंग्रेजों ने धोखेबाजी से इस देश पर कब्ज़ा किया है और वे ऐसे अत्याचारी हैं जिन्होंने भारत का बुरी तरह से शोषण किया है। धर्म व रीति रिवाजों का नाश किया और वे भारत को हर तरह से बर्बाद कर रहे हैं इस प्रकार के पत्र बड़े उत्साह से पढ़े जाते थे"।

डलहौजी की राज्य हड़प नीति के कारण सतारा, नागपुर, झासी, अवध इत्यादि विभिन्न राज्यों को कंपनी के राज्य में मिला दिया गया था। सन 1856में लार्ड केनिंग की घोषणा कि बहादुर शाह जफ़र के उत्तराधिकारी राजा नहीं कहलायेंगे ने मुगलों को कंपनी के विरुद्ध खड़ा कर दिया। नागपुर के शाही घराने के गहनों को बेचने के लिए कलकत्ता में बोली का आयोजन किया गया जिसे नागपुर राजघराने के अपमान के रूप में देखा गया। शाही परिवारों के प्रति श्रद्धा की भावना रखने वाले समाज के विभिन्न नागरिकों में राज्य हड़प नीति के कारण अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ गुस्सा स्पष्ट देखा जा सकता था। 21 मार्च 1857 को बैरकपुर में घटी मंगल पाण्डेय की घटना सैनिकों के मन में कंपनी शासन के प्रति आक्रोश को अभिव्यक्त करती है। रेजीमेण्ट को समाप्त करने और सिपाहियों को बाहर निकालने के कार्य ने आन्दोलन आरम्भ होने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। अप्रैल के महीने में आगरा,इलाहाबाद और अंबाला शहरों में भी आगजनी की घटनायें हुयीं। एनफील्ड बन्दूक की घटना ने सिपाहियों के आक्रोश को और बढ़ा दिया वे मानने लगे कि कंपनी हमारा धर्म परिवर्तन करना चाहती है। न्याय व्यवस्था में भारतीय समुदाय के प्रति अन्यायपूर्ण व्यवहार भी इस क्रांति के प्रमुख कारणों में से एक था।

1857 की क्रांति के क्षेत्र एवं स्वरूप

यह क्रांति मेरठ की छावनी से प्रारंभ होकर भारत के विभिन्न स्थानों पर फैलकर भारत से ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन की समाप्ति के साथ खत्म हुई। आन्दोलन प्रारम्भ होने के कई महीनो पहले से तनाव का वातावरण बन गया था। सैनिक छाबनियो में क्रांति का सन्देश भेजने का प्रतीक कमल का फूल था जिसका अर्थ क्रांति के लिए तैयार होना था। सामान्य जनता में अंग्रेजी शासन द्वारा छीनी गयी रोजी रोटी को प्रतीक मानकर एक गाँव से दूसरे गाँव क्रांति का सन्देश देने के लिए रोटी भेजी जाती थी। विभिन्न विद्वानों ने क्रांति का तात्कालिक कारण गाय और सूअर की चर्बी से युक्त कारतूसों को माना है। सिपाहियों को एनफ़ील्ड बंदूक दी गयी जिसमे भरने के लिए कारतूस को दांतों से काट कर खोलना पड़ता था और उसमे भरे हुए बारुद को बंदूक की नली में भर कर कारतूस को डालना पड़ता था। कारतूस के बाहरी आवरण में लगी हुई चर्बी सुअर और गाय के मांस से बनायी जाती थी। इससे हिन्दू और मुस्लिम सिपाही दोनों ही भड़क उठे। उन्हें लगा कि चर्बीदार कारतूसों का प्रयोग उनके धर्म को भ्रष्ट कर देगा। इनमें से अनेकों का विश्वास था कि सरकार जान–बूझकर उनके धर्म को नष्ट करने तथा उन्हें इसाई बनाने का प्रयत्न कर रही है क्रांति की शुरुआत 10 मई 1857 की संध्या को मेरठ में हुई थी और इस तिथि को सभी भारतवासी प्रत्येक वर्ष क्रांति दिवस के रूप में मनाते हैं। क्रांति की शुरुआत करने का श्रेय अमर शहीद कोतवाल धनसिंह गुर्जर को जाता है। भारतीय सिपाहियों ने 3 बंगाल लाइट कैवलरी के कोतवाल धनसिंह गुर्जर के नेतृत्व में विद्रोह करके अपने 85 बन्दी साथियों और 800 अन्य बंदियों को छुडाकर दिल्ली की ओर प्रस्थान किया। बहादुर शाह ज़फ़र के द्वारा उनका नेतृत्व स्वीकार कर लेने पर इस आन्दोलन को मजबूती प्राप्त हुई एवं बहादुर शाह ज़फ़र ने अपने आप को भारत का शहंशाह घोषित कर दिया। हजारों व्यक्तियों ने शहंशाह के प्रति राजभक्ति की शपथ ली। शहंशाह ने अपने नाम के सिक्के जारी किये जो कि अपने को राजा घोषित करने की एक प्राचीन परम्परा थी। अगले दिन बहादुर शाह ने कई वर्षों बाद अपना पहला अधिकारिक दरबार लगाया। दिल्ली में हुयी घटनाओं का

समाचार तेजी से फ़ैला और समस्त उत्तर भारत में क्रांति तेजी के साथ फ़ैल गयी। इसने विभिन्न जिलों में सिपाहियों के बीच असन्तोष को और फ़ैला दिया। इनमें बहुत सी घटनाओं का कारण ब्रिटिश अधिकारियों का अशोभनीय और भेदभाव पूर्ण व्यवहार था। बनारस और इलाहाबाद में सेना के निशस्त्रीकरण में गड़बड़ होने के कारण वहां भी स्थानीय विद्रोह प्रारम्भ हो गया। समग्र रूप से देखें तो कह सकते हैं कि यद्यपि सैनिकों ने क्रांति की शुरुआत की थी परन्तु जनता का सहयोग भी कम नहीं था। उत्तरी भारत की अधिकांश जनता लाठी, डंडा, भाला, कुल्हाड़ी, तीर कमान, हसिया जैसे देशी हथियारों को लेकर अंग्रेजो से भिड गई। किसान और मजदूरों ने भी इस आन्दोलन में बढ़ चढ़कर भाग लिया और इस सैनिक क्रांति को जन क्रांति के रूप में तब्दील कर दिया। आन्दोलनकारी सैनिकों ने जन सामान्य के सहयोग से कंपनी की सेना को नाकों चने चबाने को मजबूर कर दिया। मेरठ की घटनाओं के बाद बहुत जल्दी ही अवध राज्य में विद्रोह की भावना भड़क उठी। 4 जून को कानपुर में नाना साहब पेशवा क्रांति के प्रमुख सूत्रधार बने। 6 जून को इलाहाबाद में लियाकत अली के नेतृत्व में स्वतंत्रता की घोषणा कर दी गई। 12 जून को झाँसी में रानी लक्ष्मीबाई के नेतृत्व में अंग्रेजो को परास्त कर दिया गया। बरेली में भी सेना ने विद्रोह कर दिया। बिहार में क्रांति का नेतृत्व बाबू कुंवरसिंह ने किया। क्रांतिकारियों ने हरियाणा, बिहार, मध्य भारत और उत्तर भारत के महत्वपूर्ण शहरों पर कब्जा कर लिया। अवध, रूहेलखंड, दोआब, बुंदेलखंड, बिहार तथा असम के अधिकांश भाग से कंपनी शासन को उखाड़ फेंका गया। इस क्रांति के दौरान हिन्दू मुस्लिम दोनों समुदाय के अन्दर एकता स्पष्ट रूप से देखी गई। दोनों ही धर्मों के सैनिक एक दूसरे की भावना का पूरा सम्मान करते थे।

1857 की क्रांति का प्रभाव

1857 की क्रांति ब्रिटिश शासन के विरुद्ध भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु भारतीय जनता की सोच को परिवर्तित करने वाली घटना थी। यह आकस्मिक नहीं बल्कि पूरी शताब्दी के भारतीय असंतोष का परिणाम थी। इसने अंग्रेजी शासन की कमजोरी को प्रकट किया तथा उसके प्रति जनसामान्य की गहरी नफ़रत को स्थायी कर दिया। अपनी पुस्तक भारत की खोज में देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरु लिखते हैं कि "ग़दर ने सीधे तौर पर भारत के कुछ हिस्सों को ही प्रभावित किया, परन्तु उसने सारे भारत को विशेष रूप से अंग्रेजी शासन को हिला दिया" यह एक ऐसी राष्ट्रीय क्रांति थी जिसे किसी ने आहूत नहीं किया था यह किसी एक राजा द्वारा संचालित युद्ध नहीं था। बल्कि सैनिकों के हृदय में उठी क्रांति की भावना जन सामान्य में पहुँच कर भारत के कोने कोने में आजादी की लड़ाई के रूप में फ़ैल गई थी। सबका एक ही लक्ष्य था कि भारतवर्ष से अंग्रेजी शासन को उखाड़ फेंकना। 1857 की क्रांति को आसानी से भारत की स्वतंत्रता का पहला संग्राम कहा जा सकता है जो मेरठ में भारतीय सैनिकों के विद्रोह से शुरू हुआ और जल्द ही भारत के कई हिस्सों में फैल गया। ईस्ट इंडिया कंपनी के शोषण के खिलाफ भारतीय सैनिकों और जनसामान्य में आक्रोश बढ़ता ही गया। इस क्रांति के समर में समाज के लगभग सभी वर्गों और धर्मों के लोगों की भागीदारी थी। इससे स्वतंत्रता आन्दोलन के संघर्ष के संगठित स्वरूप का आगाज हुआ जो अगले 90 वर्षों तक जारी रहा। 1857 की क्रांति के बाद ब्रिटिश राज शुरू हुआ। यह भी उतना ही शोषक और जातिवादी था। यह भारतीय मामलों को समर्पित एक विशेष सचिव के माध्यम से ब्रिटिश संसद के लिए सीधे जवाबदेह था। अब भारतीयों के पास भारतीयों के पक्ष में कानूनों पर बातचीत करने की गुंजाइश थी।1857 की क्रांति में अंग्रेजों द्वारा किए गए अत्याचारों ने शासकों और शासितों के बीच की खाई को और चौड़ा कर दिया। इस क्रांति के कारण अंग्रेजों की आधुनिकता का मुखोटा हट गया और वे पूरी तरह भारतीयों से अलग थलग हो गए। अंग्रेजों ने अब नस्लीय भेदभाव खुलेआम करना शुरू कर दिया और नस्लीय श्रेष्ठता का दावा किया। यदि "इस्लामिक श्रेष्ठता" का भ्रम 800 वर्षों के इस्लामी शासन की विशेषता थी तो हिंदू और मुस्लिम दोनों के प्रति अर्थात सभी भारतीयों के खिलाफ नस्लीय आधार पर भेदभाव और अपमान की भावना अंग्रेजी शासन की विशेषता थी।1857 के विद्रोह ने ब्रिटिश रवैये को सख्त कर दिया और उन्होंने भारतीय सभ्यता और आध्यात्मिक संस्कृति वाले लोगों की इस भूमि में पाश्चात्य संस्कृति को बढ़ावा दिया। अब वे भारतीय सेना और भारतीय जनता के दमन की नीति का खुलेआम प्रयोग करते थे। लेकिन क्रांति की ज्वाला और स्वतंत्रता की इच्छा समय के साथ मजबूत होती गई। ब्रिटिश शासकों के द्वारा भारतीय लोगों के लिए कई वादे किये जैसे कि योग्यता के आधार पर सरकारी नौकरी में जनता को सहभागिता प्रदान करना,जाति और धर्म के आधार पर भेदभाव न करना, हालांकि यह भी कहना होगा ब्रिटिश शासन के दौरान लागू किए गए विभिन्न भारत सरकार अधिनियमों ने स्वतंत्रता के बाद भारत के शासन के लिए कानूनी नींव रखी।

ब्रिटिश संसद के एक नए अधिनियम (भारत सरकार अधिनियम 1858) द्वारा ब्रिटिश सरकार ने कंपनी से भारतीय क्षेत्र का कार्यभार संभाला। भारत का अधिकार अब एक परिषद द्वारा सहायता प्राप्त भारत के लिए राज्य सचिव को दिया गया था। राज्य सचिव ब्रिटिश मंत्रिमंडल का सदस्य होने के नाते संसद के प्रति उत्तरदायी था। कंपनी का गवर्नर जनरल 1858 के बाद भारत का वायसराय बन गया। विदेशी दुश्मन के खिलाफ भारतीयों में राष्ट्रीय एकता की भावना उत्पन्न होना इस क्रांति की सबसे बड़ी उपलब्धि मानी जा सकती है। 1857 के विद्रोह के बाद अंग्रेजों का रवैया और खराब और द्वेषपूर्ण हो गया। जबकि पहले उन्होंने भारतीयों को शिक्षित करने और भारत को आधुनिक बनाने की बात की थी। भारतीयों के बीच यूरोपीय शिक्षा के प्रसार को 1833 के बाद प्रोत्साहित किया गया ताकि वे ब्रिटिश और भारतीय जनता के बीच दुभाषियों के रूप में कार्य कर सकें। यहां तक कि अंग्रेजी शासन ने मैकाले की शैक्षिक विचारधारा के आधार पर भेदभाव को बढ़ावा दिया। जिसका उद्देश्य भारतीयों को उनकी सांस्कृतिक जड़ों से काट देना था, एक ऐसी पीढ़ी तैयार करना जो रंग में भारतीय होंगे लेकिन विचारों में

अंग्रेज। कई ब्रिटिश अधिकारियों ने 1857 के विद्रोह में भाग लेने से इनकार करने वाले शिक्षित भारतीयों की प्रशंसा की। लेकिन 1857 के बाद उन्होंने उन्हें संदेह की नजर से देखना शुरू कर दिया क्योंकि उनमें से कई अंग्रेजों के दोहरे मापदंड को देखने लगे थे कि कैसे विदेशी उनका शोषण कर रहे थे। वे प्रशासन में भागीदारी की मांग भी करने लगे निराशा में अधिक से अधिक शिक्षित भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन में शामिल होने लगे। यह भारत में "संगठित राष्ट्रवाद" की शुरुआत थी। विद्रोह के दौरान हिन्दू–मुस्लिम एकता को देखकर ब्रिटिश अब अधिक सक्रिय रूप से विभाजन और शासन की नीति में लिप्त हो गए। उन्होंने प्रांत के खिलाफ प्रांत जाति के खिलाफ जाति समूह के खिलाफ समूह को बांटने का कोई मौका नहीं खोया। मुख्य रूप से उन्होंने हिंदू और मुसलमानों को एक–दूसरे के खिलाफ भड़काया और मुसलमानों को लाड़ करने और उन्हें राष्ट्रवादी आंदोलन के खिलाफ मोड़ने की कोशिश की। भर्ती में जाति क्षेत्र और धर्म के आधार पर भेदभाव व्यापक रूप से प्रचलन हुआ। जमीदार अंग्रेजी शासन के भागीदार बन गए क्योंकि उन्हें उनकी विशेषाधिकार प्राप्त स्थिति और अस्तित्व को बनाये रखने का आश्वासन दिया गया था। लेकिन अंग्रेजों ने प्रशासन के आधुनिकीकरण के बहाने राज्यों के दैनिक कामकाज में हस्तक्षेप किया। उनका मुख्य उद्देश्य राष्ट्रवादियों के आंदोलनों को दबाने के लिए जमीदारों का उपयोग करना था। उन्हें भारतीय लोगों के पारंपरिक नेताओं के रूप में सम्मानित किया गया। जैसे ही उनके हितों की रक्षा की गई वे ब्रिटिश साम्राज्य के भी समर्थक बन गए।

अध्ययन का उद्देश्य–

1857क्रांति के अध्ययन का उद्देश्य स्वतंत्रता आन्दोलन की लड़ाई में प्राणों की आहूति देने वाले बलिदानियों के बारे में जानकर जीवन में विषम परिस्थिति होने पर भी उत्साह और उमंग के साथ आगे बढ़ते हुए सफलता प्राप्त करना सीखना है | 1857 क्रांति ने भारतीय जन मानस को जागृत किया और विश्वास दिलाया कि अंग्रेजो से स्वतंत्रता प्राप्त की जा सकती है। देशभक्तों के मन में स्थित क्रांति उन्हीं विचारों से देश की युवा पीढ़ी को अवगत कराकर राष्ट्रप्रेम की भावना का विकास करना का इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य है|

निष्कर्ष

इस प्रकार विभिन्न घटनाओं का अवलोकन करने पर यह बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है कि 1857 की क्रांति में हिन्दू व मुसलमानों ने एक जुट होकर विदेशी शासन को उखाड़ फेकने का एक मजबूत प्रयास किया था। मुगल बादशाह व हिन्दू पेशवाओं की एकता इस क्रांति में स्पष्ट देखी जा सकती थी। समाज के सभी वर्गों दलित, वंचित, शोषित, किसान,मजदूर, छात्र और अध्यापकों के सक्रिय सहभाग और देश से अंग्रेजो को दूर भगाने के लिए प्राणोत्सर्ग करने की ललक को देखकर हम कह सकते हैं कि आन्दोलन विदेशी शासन के विरुद्ध एक व्यापक जन आन्दोलन था न केवल एक सैनिक क्रांति। आधुनिक भारत पुस्तक में विपिन चन्द्र लिखते है कि "वास्तव में 1857 के विद्रोह ने भारतीय जनता को एक साथ जोड़ने में तथा उनमें एक देश का वासी होने की चेतना जगाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई"। क्रांति के फलस्वरूप कंपनी का क्रूर शासन समाप्त हो गया, देशी राजाओं को गोद लेने का अधिकार वापिस मिल गया। इस क्रांति ने भारतीय जन मानस को जागृत किया और विश्वास दिलाया कि अंग्रेजो से स्वतंत्रता प्राप्त की जा सकती है। हमारे स्वतंत्रता आन्दोलन की लड़ाई का संगठित रूप में शुभारम्भ होना 1857 की क्रांति की प्रमुख उपलब्धि थी जिसका अंतिम परिणाम हमें 15 अगस्त 1947 को देश की स्वतंत्रता के रूप में मिला।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

पुरोहित गोवर्धनलाल –स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास (3)1857 –1947
चन्द्र विपिन –आधुनिक भारत (118)
https://en.wikipedia.org/wiki/Indian_Rebellion_of_1857
पुरोहित गोवर्धनलाल –स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास (12) 1857 –1947
चन्द्र विपिन –आधुनिक भारत (114)
जवाहर लाल नेहरु भारत की खोज
चन्द्र विपिन –आधुनिक भारत (124)
https://simple.wikipedia.org/wiki/Indian_Rebellion_of_1857